गणेश जी की कथा (Ganesh Ji Ki Katha) :

गणेश जी की कथा (Ganesh Ji Ki Katha) :
एक बुजुर्ग महिला प्रतिदिन मन लगाकर मिट्टी केगणेश (
णेश (Ganesh)की
पूजा करती थी। गरीब बुढ़िया द्वारा बनाए गए गणेश प्रतिदिन पिघल
घल
जाते। उसकेघर केठीक सामने एक धनी व्यक्ति (सेठजी) नया घर बनवा े। उसकेघर केठीक सामने एक धनी व्यक्ति (सेठजी)
नया घर बनवा
रहे थे।े थे।
घर बनाने वाला बुढ़िया केपास आया और शिल्पकार से बोला
ल्पकार से बोला, “भाई, मेरी
मिट्टी की गणेश (णेश (Ganesh)प्रतिमा रोज पिघलती है। यदि तुम मेरी पूजा
ुम मेरी पूजा
केलिए पत्थर की गणेश प्रतिमा बनाओगे तो तुम्हें बहुत आशीर्वाद

मिलेगा।” ा।”
घर का निर्माण कर रहे कारीगर ने जवाब दिया
िया, “माँ ँ, जब तक आपकेलिए
ए
पत्थर की गणेश (णेश (Ganesh) मूर्तितैयार की जाएगी ी, तब तक सेठजी की क सेठजी की
दीवार पूरी हो चुकी होगी।” यह सुनकर बुढ़िया भारी मन से अपने घर लौट ़िया भारी मन से अपने घर लौट
आई। शाम हो गई और दीवार पूरी करने की कोशिशों केबावजूद टेढ़ी ही
ी
रह गई।ई।
शाम को जब सेठजी आये और पूछा कि उस दिन कोई काम क्यों नहीं
ीं
हुआुआ, तो मकान बनाने वाले ने बुढ़िया की कहानी सुनायी। जवाब मेंानी सुनायी। जवाब में, सेठजी
बुजुर्ग महिला केपास गए और कहा
ा, “माँ ँ, अगर आप हमारी दीवार सीधी
ीवार सीधी
कर दें ें, तो हम आपकेलिए एक सुनहरे गणेश (णेश (Ganesh) बनवा देंगे।” यह

प्रस्ताव सुनकर गणेश जी ने तुरंत सेठजी की दीवार सीधी कर दी।
ी।
सेठजी ने बुजुर्ग महिला से पूजा केलिए एक सुनहरे गणेश (
णेश (Ganesh) का
निर्माण करायाण कराया, जिससे बुजुर्ग महिला दिल में बहुत खुशी हुई और बुजुर्ग ुई और बुजुर्ग
महिला ने महिला ने गणेश जी को मन ही मन धन्यवाद् अर्पित किया।
या।